सर्वातिरिसारेण सर्वतेजोऽभिभाविना ।

स्थितः सर्वोन्नतेनोर्वीं क्रान्त्वा मेरुरिवात्मना ।।14।।

अन्वय सर्वातिरिसारेण सर्वतेजोऽभिभाविना सर्वोन्नतेन आत्मना मेरुरिव उर्वीं क्रान्त्वा स्थितः।

अनुवाद सबसे अधिक बलशाली, तथा अपने तेज से सबको अभिभूत (तिरस्कृत) कर देने वाले (राजा दिलीप) सबसे ऊंचे अपने शरीर से पृथ्वी को इस प्रकार आक्रांत (अधिकृत) कर लिया था जिस प्रकार सुमेरु पर्वत अपने दृढ़, तेजस्वी तथा उन्नत आकार से सारी पृथ्वी को व्याप्त करके स्थिर रहता है।

टिप्पणियां

प्रस्तुत श्लोक में आत्मा (शरीर) की विशेषता बताने वाले तृतीया विभक्ति एक वचनान्त पद हैं।

सर्वातिरिसारेण– सर्वेभ्य अतिरिः सारः यस्यः सः (बहव्रीहि) तेन; राजा दिलीप ऐसे शरीर को धारण किये हुए थे जो सब प्राणियों से अधिक बलवान् था।

सर्वतेजोऽभिभाविना– सर्वं च तत्तेजः इति सर्वतेजः (कर्मधारय), सर्वतेजः अभिभूतवान् इति अथवा सर्वाणि भूतानि तेजसा अभिभवति इति सर्वतेजोऽभिभावी, तेन सर्वतेजाऽभिभाविना', ऐसा शरीर जो तेज में सबसे अधिक बढ़ा चढा था अर्थात् सबसे अधिक तेजस्वी था।

क्रान्त्वा–धातु क्रम् क्त्वा।

मेरु– मेरु पर्वत भी अपनी शक्ति, तेज और आकार से पृथ्वी को व्याप्त करके स्थिर है। सुमेरु पर्वत सुवर्ण का आगार है अतएव अत्यधिक प्रभावान् है। सुमेरु का सार (धातु

आदि) अन्य पर्वतों के सार से बढ़ा चढ़ा है। सुमेरु के समान अन्य कोई पर्वत ऊंचा नहीं है। राजा दिलीप की सुमेरु पर्वत से उपयुक्त ही तुलना की गई है।